विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -१३-०४ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज वर्ण विचार के बारे में अध्ययन करेंगे ।

व्यंजन

- ऐसे वर्ण जिनका स्वतंत्र उच्चारण नहीं होता एवं उन्हें बोलने के लिए स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।
- वर्णमाला में कुल 33 व्यंजन हैं। **जैसे:** क, च, त, ट, प आदि।
- जब तक व्यंजनों में स्वर नहीं जुड़ते तब तक इनके नीचे हलन्त लगा होता है। **जैसे:** क्, च्, छ्, ज्, झ् आदि।

व्यंजन के भेद

व्यंजन के तीन प्रकार होते हैं:

1. स्पर्श व्यंजन
2. अंतःस्थ व्यंजन
3. ऊष्म व्यंजन

1. स्पर्श व्यंजन :

स्पर्श का अर्थ छूना होता है। ऐसे व्यंजन जिनका उच्चारण करते समय जीभ कण्ठ, तालु, मूर्धा, दाँत, अथवा होठ का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते है। कुल 33 व्यंजनों में 25 स्पर्श व्यंजन होते हैं।

इन्हें 5 भागों में बांटा गया है :

1. क वर्ग : क, ख, ग, घ, ङ।
2. च वर्ग : च, छ, ज, झ, ञ।
3. ट वर्ग : ट, ठ, ड, ढ, ण।
4. त वर्ग : त, थ, द, ध, न।
5. प वर्ग : प, फ, ब, भ, म।

2. अंतःस्थ व्यंजन :

अंतः का मतलब भीतर होता है। ऐसे व्यंजन जो उच्चारण करते समय हमारे मुख के भीतर ही रह जाते हैं, वे व्यंजन अंतःस्थ व्यंजन कहलाते हैं। कुल 33 व्यंजनों में से चार अंतःस्थ व्यंजन होते हैं : **य, र, ल, व**।